	+	3	=	3
योग पूर्व पृष्ठ		पृष्ठ 3 के अंक		कुल अंक

मध्यप्रदेश

प्रश्न क्रमांक – 21

~~आस्थि भंग निम्न प्रकार से होते है।~~
~~(1) साधारण आस्थि भंग ⇒~~

प्रश्न क्रमांक – 5

मनुष्य मे भेदक दांत चार होते है। ये भोजन को चबाने के काम आता है।

प्रश्न क्रमांक – 6

प्राथमिक चीकित्सा के प्रमुख उद्देशय निम्न है।
(1) सर्वप्रथम रोगी को स्वच्छ स्थान पर उठा कर ले जाना चाहिए।
(2) रोगी को सांत्वना देते रहना चाहिए।
(3) रोगी को सावधानीपूर्वक एक स्थान से दुसरे स्थान पर ले जाना चाहिए।
(4) यादि रोगी को घबराहट हो तो उसे तुरन्त चिकित्सा के पास ले जाना चाहिए।

प्रश्न क्रमांक – 4

Ans. हृदय मे तीन प्रकार के कपाट होते हैं।
(1) द्विवलन कपाट
(2) त्रिवलन कपाट
(3) अर्द्धचन्द्राकार कपाट

~~उत्तर~~
प्रश्न क्रमांक – 8

Ans. उत्तर ⇒ पीयूष ग्रन्थि निकलने वाले हॉर्मोन्स शरीर की वृद्धि सामान्य विकास प्रजनन लैंगिक विकास के साथ - साथ शरीर से निकलने वाले हॉर्मोन्स पर भी नियंत्रण रखती है इसलिए पीयूस ग्रन्थि को अन्त: स्त्रावि ग्रन्थि की मुख्य ग्रन्थि या मास्टर ग्रन्थि भी कहते हैं। इसके दो भाग होते हैं अग्र पीयूस और पश्च पीयूस इसके अग्र भाग मे दस हॉर्मोन्स निर्मित होते हैं और पश्च भाग मे चार हॉर्मोन्स निर्मित होते हैं इसमे अग्र भाग मे से एक का संबंध शारीरिक वृद्धि से होता है। इसलिए पीयूस ग्रन्थि को मास्टर ग्रन्थि कहते हैं।

B S E M P

5

6	2	8
योग पूर्व पृष्ठ	पृष्ठ 5 के अंक	कुल अंक

प्रश्नक्रमांक - 9

कृत्रिम श्वसन की सिल्वेस्टर विधि ⇒

इस विधि मे मनुष्य को सीधा लिटाकर उसके नीचे तकिया लगा देना चाहिए और कृत्रिम श्वसन देने वाले व्यक्ति को उसके पीछे घुटने के बल बैठ जाना चाहिए जिससे उसकी पीठ पर बल पड़ेगा इस से व्यक्ति श्वास लेगा और उसके जीभ को कस कर पकड़ लेना चाहिए जिससे वह छूट कर बाहर न आ सके और रोगी को साफ कपड़े से पोछ देना चाहिए अब रोगी व्यक्ति को तब तक यह कृत्रिम श्वास दिलाना चाहिए जब तक वह स्वास लेना शुरु न करे जिससे रोगी व्यक्ति को आसानी से श्वास लेना शुरु कर देगा यह क्रम तब तक करना चाहिए जब तक रोगी व्यक्ति स्वंम स्वास लेना शुरु न करे।

प्रश्न क्रमांक —10

Ans. जिह्वा मांस पेशी से निर्मित एक मांसल पीण्ड है जो छोटे छोटे कुरु से बनी होती है। इसके ऊपर का भाग खुरदरा होता है और निचे का भाग चिकना होता है इसमे मांस सूत्र अधिक पाये जाते है। जिससे यह मोटी होती है यह स्वाद का अंग है। जिससे हमे स्वाद का अनुभव होता है। इसके अग्र भाग पर मीठे स्वाद का अनुभव होता है। और किनारे पर नमकिन पन का स्वाद होता है और पीछे की तरफ कड़वे पन का स्वाद का अनुभव होता है। यह हमे अनेक प्रकार का अनुभव कराती है। इसके निम्न ~~कार्य~~ कार्य है।

कार्य ⇒ (1) यह भोजन को दाये बाये घुमाकर दातो के सम्पर्क मे लाती है।

(2) यह दातो को साफ रखती है।

B S E M P

(7) | 8 | + | 3 | = | 17 |
|---|---|---|
| योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 7 के अंक | कुल अंक |

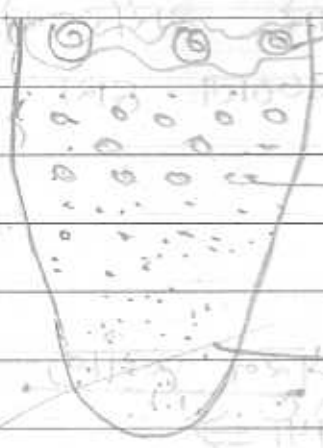

(3) यह बोलने मे मद्द्त करती है।

प्रश्न क्रमांक — 11

Ans त्वचा के कार्य निम्न है— (1) यह हमारी स्पर्शन्द्रिय है जो हमे स्पर्श का ज्ञान कराती है।

(2) त्वचा हमारे शरीर का तापमान समान रखती है।

(3) त्वचा हमारे शरीर की रक्षा करती है।

(4) त्वचा से हमे सर्दी व गर्मी का अनुभव करती है।

(5) त्वचा अनेक प्रकार के निरुपयोगी और हानिकार पदार्थो को शरीर से बाहर निकालती है।

3
अंकों का योग

(6) त्वचा हमारे शरीर को कोमल रखती है।

(7) त्वचा हमारे शरीर से हानिकारक पदार्थों को उत्सर्जन द्वारा बाहर उड़ा दिया जाता है।

प्रश्न क्रमांक — 12

Ans अनैच्छिक पेशीयाँ ⇒ ये पेशीयाँ अपनी इच्छानुसार कार्य करती है। इन पर इच्छा शक्ति का कोई नियंत्रण नही होता है। ये बिना रुके हमारे शरीर में दिन रात कार्य करती रहती है ये हमारे शरीर मे जैसे श्वास लेना, भोजन पचाना,

इन पेशियों का संबंध तन्त्रिका तन्त्र के उन केन्द्रों से होता जो अपनी इच्छानुसार कार्य करते है।

संरचना ⇒ प्रत्येक पेशी कोशिका का अंडाकार होती है यह दोनो सिरो पर नुकीली होती है और इनमे धारियाँ होती है। कोश मे बीच मे एक केन्द्रक होता है।

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग: 3

(9) 14 + 3 = 17

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 9 के अंक | कुल अंक

इसके अन्दर जो द्रव भरा रहता है ~~उसमें~~ जिसे सारकोप्लाजमा कहते है। इसके ऊपर एक आवरण होता है। जिसे सारकोलेमा कहते है।

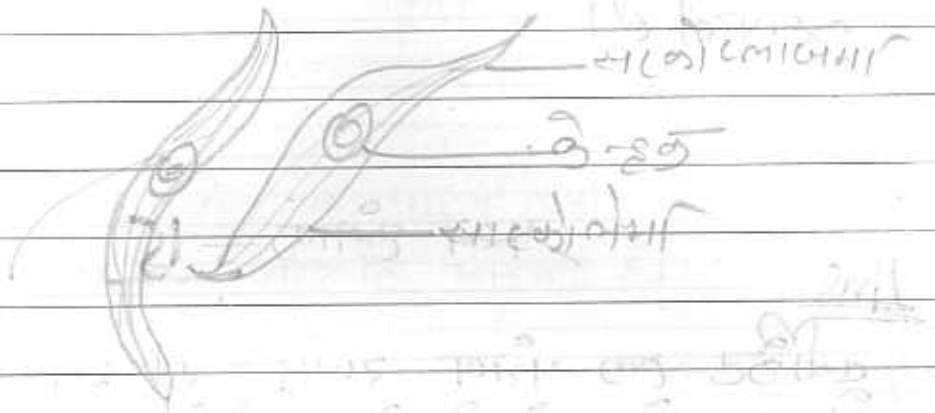

प्रश्न क्रमांक- 13

Ans- रजोधर्म मे एक अण्डवाहिनिया होती है इसको ग्रहण करने के लिये अण्डवाहिनियाँ अण्डोत्सर्ग के समय निकलेगये अण्डे को ग्रहण करने के लिये गर्भाशय तैयारी करता है। जब यह अण्डा विकसित होकर अण्डाशय से गर्भाशय मे आताहै तो तब यह 12-14 दिन शुक्राणु की प्रतिक्षा करताहै शुक्राणु न मिलने के पश्चात यह कुछ दिन बाद इसमे रहता है। इसके पश्चात यह 28 वे दिन इसका अण्डकोश फट जाता है और अण्डा अण्डाशय से बाहर निकल जाता है तो यह जननांगो से रक्त 3-5 दिन तक निकलता रहता है।

और यह क्रिया प्रत्येक 28 दिन के बाद एक अण्डा अण्डाशय से निकल जाता है। यह क्रिया रजोधर्म या अण्डोत्सर्ग कहलाती है।

प्रश्न क्रमांक — 15

Ans

टूर्नीकेट एक यंत्रण रज्जू है इसका उपयोग रक्त को रोकने के लिये किया जाता है। जब रक्त बहुत शिराओं से निकलता है तो रक्त को रोकने के लिये किया जाता है। व बाजार मे रबर की निर्मित टूर्नीकेट मिलती है यदि तुरन्त न मिलने पर इसका उपयोग प्लास्टिक सूती रूमाल या धोती की मोटी गद्दी भी बना लेते है इसलिए इसका प्रयोग रक्त प्रभाव रोकने के लिए किया जाता है यह बहुत उपयोगी होती है।

इसका उपयोग करने से पहले उस स्थान को अच्छी तरह से साफ करलेना चाहिए जिससे वह चिपकेगी नही और इसका प्रयोग अच्छी तरह से करना चाहिए। इसको प्रयोग रक्त के बहाव रोकने के लिये किया जाता है।

BSEMP

5

पृष्ठ के अंकों का योग

22 + 3 = 25

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 11 के अंक | कुल अंक

प्रश्न क्रमांक -16

Ans. मांसपेशीयों कि विशेषताएं निम्न है।

(1) मांसपेशीयां किसी न किसी संधि को आच्छादित करती है।

(2) मांसपेशीयों के कारण हमारे शरीर को एक निश्चित आकृति मिलती है।

(3) मांसपेशीयों के कारण शरीर मे गतियाँ होती है।

(4) मांसपेशियां हमारे शरीर की रक्षा करती है।

(5) मांसपेशीयों मे संकुचन एवं प्रसार क्रिया होती है।

(6) मांसपेशीयो मे फैलने एवं सिकुड़ने का गुण पाया जाता है।

(7) मांसपेशियों मे ~~सिकुड़ने एवं~~ मोटी व तनाव दार होती है।

(8) मांसपेशीयों से हमारा शरीर दृढ़ व मजबूत होता है।

BSEMP

3

प्रश्न क्रमांक - 17

लसिका से अभिप्राय रक्त निस्पंदन कोशिका वाहिनियों से होते समय रक्त का कुछ भाग कोशिका वाहिनियों से रिसता रहता है। और ऊतकों में जाता रहता है। उसके पास शेष पीले रंग तरल पदार्थ सीरम रह जाता है। इससे लसिका या लिम्फ कहते हैं। लसिका के कार्य निम्न हैं।

कार्य - (1) लसिका हमारे शरीर की रोग रोगाणुओं से रक्षा करती है।

(2) लसिका द्वारा छना गया द्रव पदार्थ वापस लाकर रक्त में मिला देती है।

(3) हमारे शरीर में किसी भी कारण वश रोगाणु आक्रमण करते हैं तो वे लसिका नोड्स पर रोक लिये जाते या वे उन्हें अपने में नष्ट कर देती हैं।

(4) लसिका हमारे शरीर में रोगाणुओं ~~से रक्षा~~ से रक्षा का स्वास्थ्य रख सकती है।

यही रक्त लसिका या लिम्फ कहलाता है।

BSEMP

4

पृष्ठ के अंकों का योग

(13) [25] + [—] = [25]

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 13 के अंक | कुल अंक

प्रश्न क्रमांक — 19

Ans
रक्त का संगठन निम्न प्रकार है।—

रक्त मे 55% रक्त प्लाजमा पाया जाता है। और 45% रक्त कणिकाये जो तीन प्रकार कि है।

(1) श्वेत रक्त कणीकाये
(2) लाल रक्त कणिकाये
(3) प्लेटलेट्स या विम्बाणु

ये रक्त के भाग होते हैं। जो रक्त मे पाये जाते है।

(1) श्वेत रक्त कणिकाये ⇒ ये हमारे शरीर मे किसी भी कारण वस जब रोगाणु आक्रमण करते है तो श्वेत रक्त कणिकाये वह प्रहरी की तरह पहुंच जाती है और उन्हे अपने मे सोख लेती है या उन्हे नष्ट कर देती है। इसलिये इन्हे शरीर रक्षक या शरीर का सिपाही कहा जाता है। ये हमारे शरीर का तापमान नियंत्रण करती है। हमारे शरीर मे रक्त मे कम संख्या मे पाई जाती है।

लाल रक्त कणिकाये ⇒
ये हमारे शरीर मे संख्या होती है इनका आकार गोल डिबिया के समान होता है जो हमारे शरीर मे लाखो हजारो में पाई जाती है। ये हमारे शरीर का ताप एक समान रखती है।

श्वेत सैल ⇒
ये रक्त का थक्का जमाने मे सहायक होती है, ये फाइब्रिन सूक्ष्म पत होती है ~~इसकी~~ यह फाइब्रिनोजन से को अलगकर देती है ये शरीर रक्त कणिकाओ मे घुस जाते है और रक्त का थक्का जम जाता है। इस प्रकार ये हमारे शरीर मे रक्त को जमाने का कार्य करती है।

रक्त के कार्य ⇒ (1)
रक्त शरीर का तापमान समान रखता है।
(2) रक्त शरीर से हानिकारक पदार्थों को शरीर से बाहर निकालते है।

(3) ~~यह शरीर रक्त को~~

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

(15) 29 + 5 = 34

योग पूर्व पृष्ठ — पृष्ठ 15 के अंक — कुल अंक

मध्यप्रदेश

(3) रक्त शरीर के प्रत्येक भाग मे ~~हॉर्मोन~~ हॉर्मोन्स पहुचाता है।

(4) यह शरीर के कोमल तन्तुओ की रक्षा करता है।

(5) रक्त शरीर मे ~~xx~~ को जहॉ पर प्रोटीन वसा आदि का पाचन करता है।

(6) रक्त भोजन रसको वहन का शरीर की सभी पेशियो तक पहुन्चाता है।

प्रश्न क्रमांक - 20

उत्तर

वृक्क मटर के बीज के समान उदर गुहा मे स्थित होता है इसका बाह्य भाग अवतल होता है इस पर एक गम्भीर छिद्र होता है इसे हाइपोथैलैमस कहते है।

वृक्क की आंतरिक संरचना को दो भागो मे ~~xxxx~~ बाँटा गया है। ~~कोर्टेक्स~~ कोर्टेक्स और मेडूला ये दो भाग होते है।

(1) कोर्टेक्स ⇒ इसका बाह्य भाग उन्नोतर होता है इसे कोर्टेक्स कहते है। इसमे संख्या सूक्ष्म कोशिकाये पाई जाती है।

5

BSEMP

5

... के अंकों का योग

16

34	+		=	34
योग पूर्व पृष्ठ		पृष्ठ 16 के अंक		कुल अंक

क्योंकि गुच्छे का निर्माण करते है। जिससे नलिकाये निकलती हैं। जिन्हें वृक्काणु कहा जाता हैं ये वृक्काणु और मैलपीघी कोश मिलकर एक जटिल क्रिया शील संरचना का निर्माण करते हैं। जिसे नेफ्रोन कहते हैं।

② मेडूला ⇒

वृक्क के मध्य भाग को मेडूला कहते हैं इसका अधिकांश भाग नेफ्रोन कहलाता हैं इसमे मूत्र वाहिनियाँ होती हैं जिनमेसे मूत्र मूत्राशय मे एकत्रित होता रहता हैं। जिसे मेडूला कहते हैं।

वृक्क की संरचना जटिल होती हैं इसकी सबसे संरचना मे नेफ्रोन पाया जाता हैं। वृक्क का नामांकित चित्र इस प्रकार हैं।

B S E M P

प्र. के प्रश्नों का योग

34	+	4	=	38
योग पूर्व पृष्ठ		पृष्ठ 17 के अंक		कुल अंक

मध्यप्रदेश

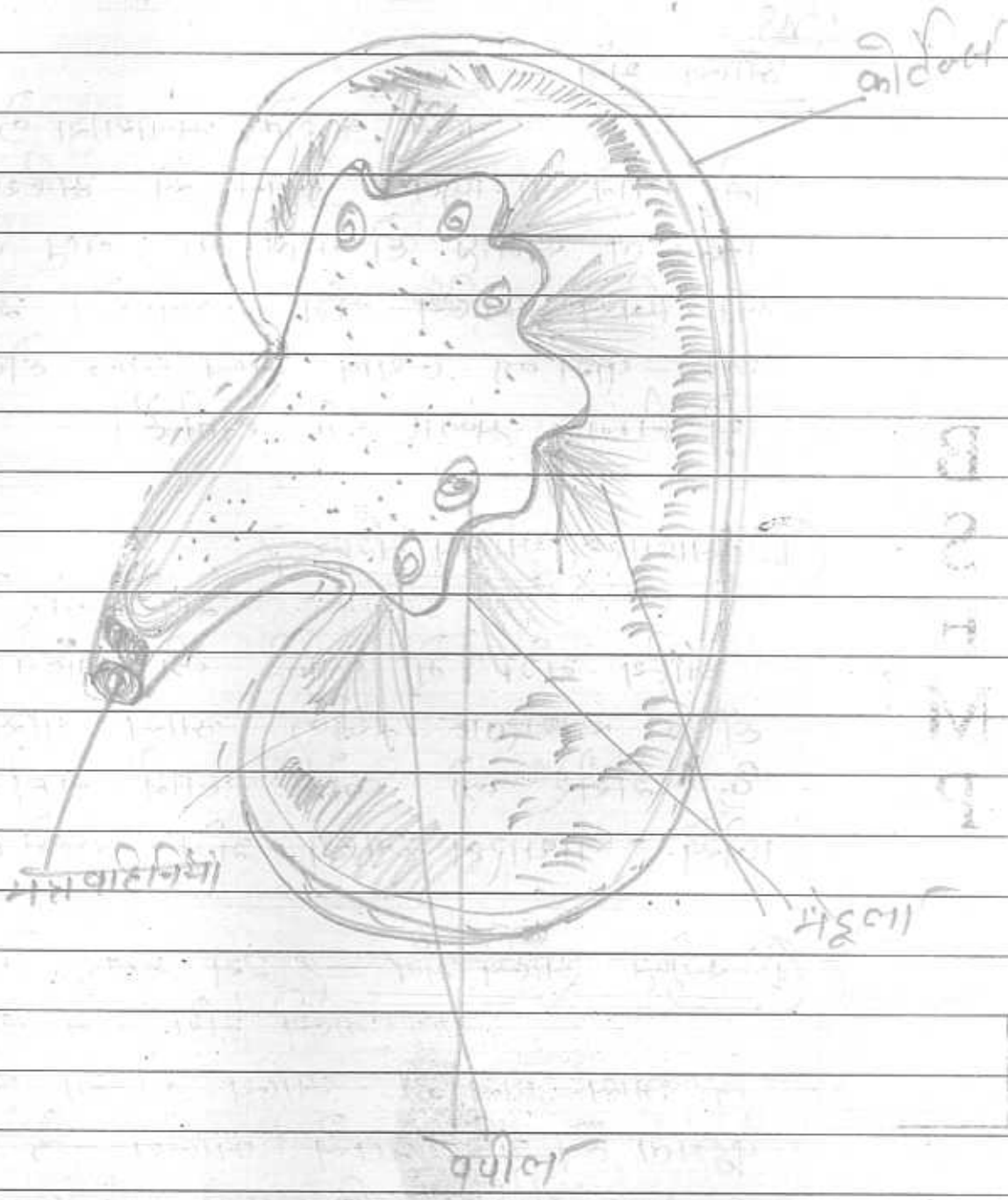

BSEMP

4

पृष्ठ के अंकों का योग

प्रश्न क्रमांक – 21

Ans

अस्थि भंग –

चलते चलते अनायास के कारण गिर जाने या फिसल जाने से अस्थि की निरंतरता समाप्त हो जाती या नष्ट हो जाती है। जिसे अस्थि भंग कहते है। उसका आस-पास का स्थान अस्त व्यस्त होता है। ये निम्न प्रकार की होती है।

(1) साधारण अस्थि भंग – इस प्रकार के अस्थि भंग मे व्यक्ति की अस्थि टूटती है तो ~~साधारण~~ इसके आस पास या के शरीर को कोई हानि नही होती है। जिसे साधारण अस्थि भंग कहते है।

(2) संयुक्त अस्थि भंग – इस प्रकार के अस्थि भंग मे मनुष्य के आस-पास की अस्थि को भी आघात पहुचता है। और इससे अस्थि के आगे का भाग भी अस्थि कि त्वचा से बाहर हो जाता है और यह बहुत दर्द करता है।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

(3) प्रतिल अस्थि भंग ⇒

प्रतिल अस्थि भंग में एक अस्थि दूसरे अस्थि के साथ टूट जाती है और यह त्वचा से बाहर आकर देदे देती है इस प्रकार की अस्थि भंग को प्रतिल अस्थि भंग कहते है और इसमे एक अस्थि दूसरी अस्थि पर चढ जाती है और बहुत दर्द होता है।

(4) नतशाखा अस्थि भंग ⇒

इस प्रकार की अस्थि भंग को कच्ची टूट कहते है इसमे एक अस्थि चटक जाती है और इसकी निरंतरता समाप्त नही होती है और यह पूर्ण तह टूटती नही इसको कच्ची टूट भी कहते है इसमे अस्थि की टूटती है और इस प्रकार की अस्थि को नत शाखा अस्थि भंग कहते है।

(5) पेच्चड अस्थि भंग ⇒

इस प्रकार की अस्थि भंग मे अस्थि के कई टुकडे हो जाते है इससे अस्थि के कई टुकडे हो जाते है और अस्थि एक दूसरे के [illegible] के ऊपर चढ जाते है इसे पच्चड अस्थि भंग कहते है।

(20) | 38 | + | 8 | = | 46 |

योग पूर्व पृष्ठ — पृष्ठ 20 के अंक — कुल अंक

(6) जटिल संयुक्त अस्थिभंग =>

इस प्रकार की अस्थि भंग कभी-कभी साधारण अस्थि भंग भी जटिल अस्थि भंग मे बदल जाता है और यह बहुत दर्द होता है इस प्रकार की अस्थि को जटिल संयुक्त अस्थि भंग कहते हैं।

प्रश्न क्रमांक - 2

Ans 2 शरीर मे अन्तःस्त्रावी ग्रन्थियों से निकलने वाले रासायनिक तत्व को हॉर्मोन्स कहते हैं।

प्रश्न क्रमांक - 3

उत्तर अस्थि संस्थान द्वारा हमारे शरीर का निर्माण होता व्यस्को मे 206 और बालको मे 206 छोटी बड़ी अस्थियाँ पाई जाती हैं जो आपस मे संयुक्त होकर शरीर को एक निश्चित आकृति प्रदान करती हैं अस्थि कहलाती है या शरीर को मजबूत ढाचा तैयार होता है इसे अस्थि कहते हैं।

BSEMP

8

पृष्ठ के अंकों का योग

प्रश्न क्रमांक -1

Ans हमारे शरीर मे अनेक श्वेत पींड पाये जाते हैं जो हमारे शरीर की के बाह्य आघातो से रक्षा करती हैं इसे त्वचा कहते हैं। यह हमारे शरीर से ~~निकुलती~~ हानिकार पदार्थ बाहर निकलती है।

प्रश्न क्रमांक -7

Ans गीली मरहम पट्टी का उपयोग शरीर मे अधिक ज्वार को कम करने के लिये किया जाता है। हमारे शरीर मे यदि अधिक तेज ज्वार होता है रूमाल या रोये दार तोलिये को पानी मे डुबो कर शरीर के सम्पर्क मे लाते है इससे हमारे शरीर का दर्द कम होता है और पीडा भी कम होती है इस गीली पट्टी का उपयोग करते है।
बर्फ की थैली
का उपयोग भी करते है। यह हमारे शरीर की सूजन या दर्द को कम करने के लिये काम मे लाते है। इस प्रकार हमारे शरीर मे गीली पट्टी का उपयोग करते है।

BSEMP

(22) | 45 + — = 45
योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 22 के अंक | कुल अंक

प्रश्न क्रमांक – 22

हमारे शरीर मे कुछ अनेक अन्तः स्त्रावि ग्रान्थियो है जो हॉर्मोन्स निर्मित होते है। जिसे हॉर्मोन्स कहते है इसे बाहर जाने के लिए नलिकाये नही होती है वो ये सीधे रक्त मे संचरण करती है। इसे नलिका विहिन ग्रान्थियाँ कहते है।

हमारे शरीर मे कई प्रकार की नलिकाये पाई जाती है जो अनेक प्रकार के रसायन हॉर्मोन्स का स्त्राव करते है इन्हे शरीर ग्रोथ हॉर्मोन्स कहते है। यदि एक भी हॉर्मोन्स अपना कार्य करने बन्द करदे तो शरीर की ग्रोथ रुक जाती है। और शरीर का संतुलन गड़बड़ा जाता है। इसलिये हमारे शरीर मे अनेक प्रकार की नलिका वाहिनियाँ पाई जाती है जो अपने-अपने स्थान पर कार्य रहती है।

(1) थॉयराइड ग्रान्थि ⇒

यह श्वास नलिका के दोनो ओर H के आकार की ग्रान्थि होती है जो सब से महत्व पूर्ण ग्रान्थि होती है इसका वजन करीब ~~होता है किलो ग्राम~~ 20/40 किलो ग्राम होता है। इस मे अनेक मेगाकार गोलाकार पुटिकाये पाई जाती है।

महत्व ⇒ यह हमारे शरीर के मे ऑक्सीजन एव कैलशियम को पाचन करती है यह ह्रदय स्पंद दर को बढ़ाती है और यह हमारे शरीर का ताप नियंत्रित करती है।

पीयूस ग्रान्थी ⇒ पीयूस ग्रान्थि शरीर से निकलने वाले हमारे रासायनिक हॉर्मोन्स जो शरीर की वृद्धि विकास यौगिक जनन प्रजनन ~~आदि~~ के साथ साथ शरीर की अन्तःस्त्रावी ग्रान्थियो पर भी नियंत्रण करती है इसे अन्तःस्त्रावी ग्रान्थी की मुख्य या मास्टर ग्रान्थि भी कहते है। इसमे अनेक हॉर्मोन्स निकलते है।

महत्व ⇒ यह हमारे शरीर की विभिन्न हॉर्मोन्स जो शरीर की वृद्धि करते है और पीयूस ग्रान्थि ~~हमारे शरीर~~ मे से निकलने वाला हॉर्मोन्स हमारे शरीर को वृद्धि प्रदान करता है इससे हमारा शरीर बहुत अच्छा होता है और चयापचय मे भी सहायता करता है।

(3) पैराथाइरॉइड ग्रान्थी ⇒ ~~यह~~ इस ग्रान्थि की खोज सैंड्स्ट्रोम ने की थी यह तीन भ्रूण और चार कसलनी कोशिकाओं से बनी होती है।

(24) 49 + 5 = 54

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 24 के अंक | कुल अंक

~~यह~~ इसके दो भाग थाइरॉइड ग्रन्थि की पृष्ठ सतह पर धसे ~~x~~ रहते हैं जिन्हे अग्र पैराथाइराइड कहते हैं और दो पीछे की ओर ~~x~~ धसे रहते हैं ~~x~~ जिसे पश्चकि पैराथाइराइड कहते हैं।

<u>महत्व</u> — शरीर के लिये आवश्यक हॉर्मोन्स ~~x~~ पैराथारमोन्स होता हैं। यह कैलशियम के चयापचय मे सहायक होता हैं। यह P के चयापचय मे भी सहायता प्रदान करता हैं।

प्रश्न क्रमांक ⟹

5

पृष्ठ के अंकों का योग

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

परीक्षक के लिये
स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर लगायें

...की सील

...वेक्षक के हस्ताक्षर व दिनांक 16-3-07

केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर की सील

उत्तर पुस्तिका का
सरल क्रमांक 221128

4. केन्द्र क्रमांक केन्द्र क्रमांक-13008

1. परीक्षार्थी का रोल नम्बर (अंग्रेजी अंकों में)

2	7	1	3	1	7	1	4	4

6. परीक्षा का नाम हायर सेकेण्डरी

7. विषय मातृकला 8. माध्यम हिन्दी

2. रोल नम्बर शब्दों में दो, सात, एक, तीन, एक, सात, एक, चार, चार

8. दिनांक 16/03/07

पृष्ठ

प्रश्न क्रमांक-18

Ans

संधि ⇒ हमारे शरीर मे जिस स्थान पर दो या दो से अधिक अस्थियाँ संगम करते हों उन्हे संधि कहते हैं ये निम्न प्रकार की होती हैं।

(1) चल संधि ⇒ इन संधिओं के ऊपर कोलेजन का आवरण पाया जाता है यह इसे चारो तरफ से ढके रहता है। यह हमारे शरीर मे जुड़िली होती हैं और उस मे अनेक संधियाँ होती हैं जो निम्न प्रकार की हैं।

(2) फिसलने वाले संधि ⇒ ये संधि मे एक मोटी गद्दी सी होती हैं जिससे वह एक दूसरे पर फिसलती रहती हैं जैसे हाथ की कलाई या हथेली

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

आदि इसकी मोटी गद्दी होतीहै जिससे ये फिसल रहतीहैं इन्हे सर्पीलाकार संधि भी कहते है।

(3) कीलदार संधि ⇒

इस प्रकार की संधि एक दूसरे के अंदर घसी रहती है जैसे गर्दन और मस्तिष्क गिरिधा का आर्तिक शीर्ष होना यह एक दूसरे में घसी रहती है जिससे यह आगे पीछे घुमती रहती है। इन्हे कीलदार या कबजेदार संधि भी कहते है।

(4) गेंदधार या ख्वालेदार संधि ⇒

ये संधि गोल रहती है जो हमारे शरीर मे अनेक भागो मे पाये जाते है जैसे घुटने, जबड़े आदि मे ये संधि पाई जाती है। जिससे हम शरीर को आगे पीछे घुमा कस सकते है। इस प्रकार की संधि गेंदधार या ख्वाले धार होती है।

(5) अपूर्ण संधि ⇒

इस प्रकार की संधि मस्तिष्क मे पाई जातीहै जो मस्तिष्क तक फैली होतीहै जो मजबूत होतीहै जो हमारे शरीर बाह्य

54	+	4	=	58
योग पूर्व पृष्ठ		पृष्ठ 3 के अंक		कुल अंक

आघातों से रक्षा करती है। इस प्रकार की संधि को अपूर्ण संधी कहते हैं।

प्रश्न क्रमांक — 14

~~जीवाणु हमारे भूमि की उर्वरता बढ़ाने में क्या~~

उत्तर ⇒ (1) कृषि क्षेत्र में ⇒

डी नाइट्रीकरण जीवाणु जो वायु की शुद्ध ऑक्सीजन को मुक्त करके नाइट्रोजन में बदल देते हैं और भूमी की उर्वरक शक्ति बढ़ाने में सहायक होते हैं।

(2) डेरी उद्योग में ⇒

कुछ जीवाणु दूध की शर्करा को स्वयम में पचाकर और लैक्टिक अम्ल को विखण्डित कर जीवाणु दूध को दही में बदल देते हैं।

(3) चाय उद्योग में ⇒ कुछ जीवाणु पत्तियों को किण्वित कर देते हैं और बहुत समय तक उन्हें उच्च ताप पर रखा जाता है। जिससे जीवाणु उसमे विशेष प्रकार की गंध उत्पन्न कर देते हैं।

BSEMP

4

के अंकों का योग

पृष्ठ

58	+	1	=	59
योग पूर्व पृष्ठ		पृष्ठ 4 के अंक		कुल अंक

(4) एसिटिक अम्ल में ⇒ बहुत से जीवाणु शर्करा के घोल को विखण्डित कर उसे ग्लूकोज मे बदल देते है।

(5) औषधियों के निर्माण में ⇒ बहुत से जीवाणु बहुत लाभकारी दावाओ का निर्माण करते है। जैसे- पैरामाइसीन आदि बहुत सी दावाओं का निर्माण करते है।

(6) जूट उद्योग में ⇒ बहुत से जीवाणु की सहायता से के पौधो से जूट को अलग कर सकते है इनके रेसो को पानी मे रखा जाता है और इसमे से जूट को अलग किया जाता है। जिससे जूट के रेसे निकाले जाते है। और इसके रेसमी और ऊनी वस्त्र बनाये जाते है।

1

अंकों का योग

(7) पेय पदार्थ में ⇒ बहुत से जीवाणु हमारे पेय पदार्थ जैसे- शराब, कॉफी चाय तबाकू आदि

—x—

59
25